

भिखारी ठाकुर कृत तमासा

# बिदेसिया

---

## पात्र- परिचय

बिदेसी - गांव के एगो बेरोजगार युवक

बटोही - मजदूरी करे बदे बाहर आवे-जाये वाला एगो प्रौढ़

रंडी - कलकता प्रवास में बिदेसी के दूसरकी पत्नी भा रखैल

देवर - गांव के एगो बदमास युवक

दोस्त - बिदेसी के साथी आ हितैषी

अन्य पात्र - सूत्रधार, समाजी, दु गो बच्चा आ एगो ग्रामीण महिला

---

बिदेसिया डॉट को डॉट इन के सौजन्य से

ईमेल - [srijan\\_media@yahoo.com](mailto:srijan_media@yahoo.com) व [vishwabhojpuria@gmail.com](mailto:vishwabhojpuria@gmail.com)

## ( सूत्रधार मंच पर आ के मंगलाचरण सुनावतारे )

वामांके च विभाती भूधरसुता देवापणा  
मस्तके...

### फिर चौपाई होता

मंगल भवन अमंगल हारी  
द्रबहु सो दसरथ अजिर बिहारी.  
महावीर बिनवों हनुमाना  
जासु सुजस प्रभु आप बखाना.  
धन्य-धन्य गिरिराज कुमारी  
तुम समान नहिं कोउ उपकारी.  
नाच तमासा कीर्तन जेते  
होखत बा सब जग मंह तेते.  
नावत बानी सब कर माथा  
चित देइ सुनहु बिदेसिया काथा.  
एह किताब के सब बिस्तारी  
थोरही में सब कहत भिखारी.

आज बिदेसी के तमासा होइहन.  
बिदेसी के तमासा काहें? दूर-दूर के  
लोग कहेला जे बिदेसिया के नाच  
देखे चलेके. बिदेसिया के नाच ना  
हवन, बिदेसिया के तमासा हवन. एह  
तमासा में चार आदमी के पाट बा.  
बिदेसी एक, प्यारी सुंदरी दू, बटोही  
तीन, रखेलिन चार.

अथवा बिदेसी ब्रह्मा, बटोही धरम,  
रखेलिन माया, प्यारी सुंदरी जीव.  
ब्रह्मा जीवन दूनो जाना एही देह में  
बाड़न बाकी भेंट ना होखे. कारण?  
माया. एकरा के काटे वाला बटोही ध  
रम. आत्मा से परमात्मा काहे कुरोख  
हो गइलन. देना का झंझट से चाहे  
विरोध का झंझट से जइसे स्त्री के  
पति छोड़ परदेस चल जालन तइसे  
झूठ-झंझट से आत्मा से परमात्मा  
कुरोख हो जालन. बीच में कारन

रखेलिन स्त्री. झंझट से छोड़ा के  
मिलाप करा देबे खातिर बटोही  
उपदेश. एह चारो के संवाद होखे के  
चाहीं.कइसन? प्यारी सुंदरी के राधिका  
जी लेखा, बिदेसी के श्रीकृष्णचंद्र  
जी लेखा, रखेलिन के कुबरी लेखा,  
बटोही के उधो जी लेखा.  
पतिव्रत धरम स्त्री खातिर सब धरम  
से उत्तम धरम ह जइसे...

**उत्तम के अस बस मन माहीं,**

**सपने हूं आन पुरुष जग नाहीं.**

पतिबरता सती सुलोचना के रामजी से  
बात भइल, स्तुति कइली. कहली का  
जे हमरा पति के सीस ना देब त...

**अब हम जाइ मरब सत साथी,**

**मिलब हमहीं जस मिलत समाधि.**

पतिबरता के इ दुख काहे भइल?  
जइसे लरही- धरन-कमरबाला पर  
जतना भार रहेला ततना भार कोरो पर  
ना रहे. राजा हरिश्चंद्र में पूरा सत  
भइल ह, तब डोम किहां बिक  
गइलन हा, जेकर किरती आज ले  
गवात बा. ई केहू कहे जे बनउवा  
बात ह तेकरा खातिर बनउवा ह.  
कइसे? जवना कुंआ के जल ऊख में  
पटावल जाला, उहे कुआं के जल से  
मरिचा पाटेला, उहे जल ऊख के  
मिठा अउर मरिचा के तीत कर देला.  
जइसे-

**जाकी रही भावना जैसी**

**प्रभु मूरति देखी तिन तैसी.**

बिदेसी उहे हवन.बिआह कर के घर  
में जनाना के बइठा देलन. अपने चल  
गइलन कमाए. बहरा से एगो खत  
भेजतारन, ना खबर भेज तारन, ना  
खरच-बरच खातिर पांच गो रुपया  
मनीआडर से भेज तारन. बाहर में  
जाकर दोसर जनाना रख ले तारन.

एहिजा घर में प्यारी सुंदरी रोअ तारी.  
बटोही उहे हवन जे गांव-नगर से  
बहरा जा तारन, आवतारन. ओह बाट  
के हाल जान तारन. अथवा बिदेसी  
रामचंद्र जी. भरत जी महाराज बटोही  
बन के रामजी के बन से फेरे खातिर  
गइले हा. ऊ बिदेसी त दोसर दोसर  
जनाना राखि लेलन तेहसे ना  
लवटलन बाकी रामचंद्र जी काहे ना  
लवटलन.?

**तापस भेस बिसेस उदासी**

**चौदह बरिस राम बनवासी.**

भादो महिना के अन्हरिया तेरस का  
दिन आधा राति खानी प्यारी सुंदरी  
सोचतारी...

भादो दरसावत, आधा राति होइ जावत  
बदी तेरस परि जावत, बूंद  
झम-झम-झमकत बा  
घेरत घनघोर, झिंगुर दादर मचावत  
सोर

दामिनी दल साजि-साजि,

चम-चम-चमकत बा

पुरवा पवन आवत, सनसनावत,  
सरमावत

मनभावत नइखे सरग,

दम-दम-दमकत बा.

कहत भिखारी, भारी जारी जनावत

तमतरुनी के तबीयत भीतर

बम-बम-बमकत बा.

ओह समय में प्यारी सुंदरी का कह  
के रोवतारी

**( लोरिकायन का लय में )**

जनियां मकनियां में, हनि के केवरिया  
डहकत बाड़ी बारम्बार.

पिया घरी रहितन, जवन-जवन

चहितन

कहितन करितीं तइयार.



मनवां भवनवां अंगनवां में लागत  
नइखे  
कब मिलिहन समाचार.  
कहत भिखारी नाई, प्यारी के चरित  
गाई  
काइ करिहन करतार?

### ( जतसारी के लय )

ए सामीजी, जवना जूने भइल  
सुमंगली  
त जनलीं जे भाग जागल हो राम  
ए सामीजी, नइहर से नाता तूरी दिहल  
त ससुरा सोहावन लागल हो राम.  
ए सामीजी, घरवा-भीतरवा बइठाइ  
कर गइल  
कवना दो मुलुकवा भागल हो राम.  
ए सामीजी, खतवा में पातवा पेटइत  
त सुनी के अगरइती पागल हो राम.  
ए सामीजी, सुसुकी-सुसुकी, लोरवा  
पोंछत बानी  
केहू नइखे सुनत रागल हो राम.  
ए सामीजी, कहत भिखारी नाई,  
पतइन खाई के  
मिमिआली छागल हो राम.

(दोसरा तरह के जतसारी के लय)  
डगरिया जोहत ना, बीतत बाटे आठ  
पहरिया हो, डगरिया जोहत ना.  
धोती पटधरिया के कान्हावा पर  
चदरिया हो.  
बबरिया झारि के ना, होइब कवना  
सहरिया हो बबरिया झारि के ना.  
एकऊ ना भेजवल खत कतहूं से  
खबरिया हो.  
नगरिया देखि जा ना, नइखीं खोजत  
बटसरिया हो. नगरिया देखी ना.  
केइ हमरा जरिया में भिरवले बाटे

अरिया हो  
चकरिया दरि के ना, दुख में होत बा  
जतसरिया हो, चकरिया दरि के ना.  
परोसी कर थरिया,  
भात-दाल-तरकरिया हो  
लहरिया उठे ना  
रहित,करित जेवनरिया हो लहरिया  
उठे ना.  
कहत भिखारी मनवा, करेला हर  
घरिया हो  
उमरिया भरिया ना  
देखत रहतीं भर नजरिया हो  
उमरिया भरी ना.  
(सोरठी के लय)

पिया कहलन बहरा जाइबि, कुछ दिन  
में घुमि आइबि  
ए किया हो मोर राम  
सुकवा उगल तब गइल भाग हो राम  
जाये नाहीं दिहतीं कबहूं  
लाखो तरे कहितन तबहूं  
ए किया हो मोरे राम  
पहिले से रहितिं तनी भर जागल हो  
राम  
तब से ना नींद आवेला  
घर ना अंगनवां भावेला  
ए किया हो मोरे राम  
एही सोची मनवा भइल बा पागल हो  
राम  
कहत भिखारी दास, दिअरा में घर ह  
खास  
ए किया हो मोरे राम  
सांवली सुरतिया बा मनवा में लागल  
हो राम

कवन सांवली सूरति?  
जवना सांवली सूरति खातिर  
विश्वामित्र जी तपस्या छोड़ि के

अयोध्या पहुंचलीं हां. दसरथ जी  
महाराज कहलीं हां जे अपने के  
कहहीं में देरी बा, हमरा करे में देरी  
नइखे.  
विश्वामित्र जी कहलीं हां- नील  
बरनवारे, जिनकर नीला रंग के कमल  
लेखा बदन बा, हम उनुके खातिर  
अइलीं हां-  
असूर समूह सतावहीं मोंही  
मैं जांचन आयहूं नृप तोहीं.  
दसरथ जी महाराज कहलीं हां कि  
राज मांगी, धन मांगी, प्रान मांगी,  
बाकी सांवली सुरत दल कबूल नइखे.  
विश्वामित्र जी महाराज कहलीं हां जे  
हम स्राप देबि. दसरथ जी महाराज  
कहलीं हां-स्राप कबूल बा. दुनिया  
बदनाम करी सेहू कबूल, बाकी  
सांवली सूरत देबल कबूल नइखे.  
तब बसिष्ठ बहुविधि समुझावा. नृप  
संदेह नाम कहं पावा.  
झगरा बसिष्ठ जी महाराज छोड़वलीं  
हां.  
**अथवा आजु के प्यारी सुंदरी का  
कहि रोअतारी-**  
ए किया हो मोरे राम, जब से परदेस  
बाड़न रहल हो राम.  
ए किया हो मोरे राम, तनी ना सोहात  
बा कवनो टहल हो राम.  
ए किया हो मोरे राम, रहि-रहि के  
मनवा जात बा दहल हो राम.  
ए किया हो मोरे राम, कवनी बेयरिया  
आइ के बहल हो राम.  
ए किया हो मोरे राम, कबहूं के  
नइखी दुखवा सहल हो राम.  
ए किया हो मोरे राम, सुनहट लागत  
बा दुअरा महल हो राम.  
ए किया हो मोरे राम, ओहिजा उड़त  
बा चहल-पहल हो राम.



ए किया हो मोरे राम, एहिजा के  
लहकल-सहकल ढहल हो राम.  
ए किया हो मोरे राम, नइखे भिखारी  
से जात कहल हो राम.

**एगो हई ह...**

परदेसी के सोचे मरलीं.  
अन-पानी के सवाद रुचत नइखे,  
कबहूँ पेट ना भरलीं.  
मतलब मोर बिधाता जनिहन, प्रेम  
का फंदा में परलीं.  
छठ,एतवार एको ना छोड़लीं, बरत से  
काया के जरलीं.  
कहत भिखारी उपाय नइखे लउकत,  
कोटिन जतन क के हरलीं.

**फेरु अइसे कहाता-**

पियवा गइलन कलकतावा ए सजनी  
तूरी दिहलन पति-पत्नी नातावा ए  
सजनी  
किरिन भीतरे परातवा ए सजनी  
गोड़वा में जुता नइखे, सिरवा पर  
छातावा ए सजनी  
कइसे चलिहन रहतवा ए सजनी...  
सोचत-सोचत बीतत बाटे दिन रातवा  
ए सजनी  
कतहूँ लागत नइखे पातवा ए सजनी.  
लिखत भिखारी खोजीकर  
बही-खातवा ए सजनी.  
प्यारी सुंदरी के बातवा ए सजनी...

**कबो ईहो-**

पिया निपटे नादानवां ए सजनी.  
हमरा घोंटात नइखे कनवां भर अनवा  
ए सजनी.  
चाभत होइहें मगही पानवा ए सजनी.  
भीतरे रोवत बाड़न तनवां में मनवां ए  
सजनी.

छोड़त होइहन मुसुकनवा ए सजनी.  
लड़िका नइखन भइल बाड़न  
मस्तानवा ए सजनी.  
जेकर हइसन बा जनानवा ए सजनी.  
गावत भिखारी हउए कुतुबपुर  
मकानवां ए सजनी,  
प्यारी सुंदरी के गानावां ए सजनी...

**चौपाई**

श्री गणेश महोदेव दिनेसा, जेही सुमिरे  
सब मिटे कलेसा.  
तेहि चरन में मैं सिर नाऊं, चरचा  
कुछ बिदेस के गाऊं.  
जयति भागवत, जय बाल्मीकी, जयति  
रामायण श्री तुलसी की.  
संत मंडली पद सिर नाऊं, विप्र चरन  
रज सीस चढ़ाऊं.  
कवि सज्जन सबके पद बंदे, करहू  
कृपा जो होखो अनंदे.  
गिरत बानीं सकल चरना, जो बिनु  
स्वारथ अघ सिर धरना.  
विद्या से बानी कमजोरा, करहूँ माफ  
सब अवगुन मोरा.  
बिचरु नाटक बानीं बनावत, बिनु  
विद्या के नइखे आवत?  
गावे लायक हम ना बानीं, पत राख  
अम्बिका भवानी.  
अब आगे के सुनहुं बेयाना, करत  
बिदेसी बिदेस पयाना.  
कहत पियारी से तुरते जाइब, चतुर  
बानीं हम बहुत कमाइब.  
पत्नी कहे पति जा मत बहरा, केइ  
लगावल अइसन लहरा?  
(सूत्रधार के प्रस्थान)  
समाजी-(चौपाई)  
बाल्मीकी महाभारत गीता, करहु कृपा  
जग जननी सीता.

एह नाटक के बिचरु बाना, गावत  
बानीं बिदेसिया गाना.  
पति कहे पत्नी से बाता, हम जाइब  
देखे कलकाता.

**( एक ओर से पहिले बिदेसी आ  
दोसरा ओर से प्यारी सुंदरी के  
प्रवेश )**

बिदेसी- हो प्रानप्यारी, सुनतारु?  
प्यारी सुंदरी- का कहतानी ए स्वामी  
जी?  
बिदेसी- एगो सलाह बा.  
प्यारी- भला कवन सलाह बाटे?  
बिदेसी- सलाह बा कि हमार मन  
करता जे तनी कलकाता से जाके हो  
अइतीं.  
प्यारी- ए रवों, रउआ कलकाता जाये  
के कहत बानीं, रउआ कवना बात के  
तकलीफ बाटे?  
बिदेसी- हमरा कवनो बात के  
दुख-तकलीफ नइखे बाकी हमार  
दोस्त अलइन हा कलकाता से.  
कलकाता के समाचार सुनि के हमरो  
तबियत कइले बा कि हमहूँ जाइब.  
हम पंद्रह दिन में लवटि के चल  
आइब.  
प्यारी- ए रवों पनरह दिन खातिर  
कहतानीं, हम घरियो छन भर खातिर  
रउआ के अपना आंखी के सोझा से  
ना जाये देब.  
बिदेसी- हम जतरा कइले बानीं त  
देख, जतरा पर ठकठेनीं तू मत कर.  
सुंदरी-(गीत)  
दूनो एके साथे रहे के परानी.  
देस परदेस में असाम-मुलतानी,  
संगही में राख चरनों के दास जानी.  
दूनो एके साथे...  
गवना करा के देस जइब बिरानी,  
केकरा पर छोड़ी के टूटही पलानी?



दूनों एके साथे...  
 केकरा से आग मांगब? केकरा से पानी?  
 खाला-ऊंचा गोड़ परी चढ़ल बा जवानी. दूनों एके साथे...  
 कहत भिखारी सून होई रजधानी, पति मति फेरि द बिंधाचल भवानी. दूनों एके साथे...  
 बिदेसी-(चौबोला)  
 मन हमार परदेस जाये के चाहत अबहीं प्यारी.  
 जल्दी से तैयार करहु कुछ, रास्ता के बटसारी.  
 फिरती बार तोहरे पहिरन हित कीनब बगला सारी.  
 कहे भिखारी खुसी रह घर, मत कर सोच हमारी.  
 प्यारी-(चौबोला)  
 हाय नाथ, तोहें सौंप दीन्ह मोर भाई, बाप महतारी.  
 सत के बंधन तोड़ि के स्वामीजी मति करहु बरिआरी.  
 हम तोहे संबंध बिधाता जोड़ी रचेउ बिचारी.  
 कहे भिखारी कुसल करहु नित गनपति-उमा-त्रिपुरारी.  
 बिदेसी-(चौबोला)  
 परदेस जाइब हे प्रिये, घर में रह तनी धीर से.  
 आंखों में आंसू आ रहे, कपड़ा भिंजत है नीर से.  
 तन-मन-जिगर से कहत हूं, भगवान रखिहें सरीर से.  
 कहते भिखारी तोहे संगे आ के फगुआ खेलब अबीर से.  
 हे प्रानप्यारी, देख, आउर महीना में कहुं रह जाइब लेकिन फगुआ के दिन तहरा संगे आ के रंग-मसाला

जरुर होई.  
 सुंदरी- परदेस जाये कर कहि के जीव मत तरसाइये.  
 कछु भूल-चूक जो हाय हमसे पदति मत बिसराइये.  
 एक सोक-सागर -धार में कछु छोड़ि हमें मत जाइये.  
 कहते 'भिखारी' घरहिं रहिकर प्राणनाथ! बचाइये.  
 गोड़ पर गिरतारी  
 बिदेशी - अनेरे गोड़ फुट-फुट गिरतारू  
 सुन्दरी- कविता  
 अंगना आनन्द लागत, दुअरा बधाव बाजत,  
 जाये के बिदेस रउआ कबहुं मत भाखिये.  
 धोती आ कमीज, टोपी आसकोट सिलाई देहब,  
 इतर के बात तेल भूतनाथ मखिये.  
 बिबिधा मिठाई, पकवान, तरकारी, दधी, निमिकी, मोराब, पापड़ घरहीं सब चाखिये.  
 कहत 'भिखारी' पिया हिया में छमा करिके हम से गरीबनी पर दया नित राखिये.  
 बिदेसी- हम जाइब परदेस के, घर में करउ बहार.  
 बरिस दिन पर आइब सुनिलउ, छैल छबीली नार.  
 सुन्दरी- चलि जइबउ परदेस के, घर में रहब अकेले.  
 कहत 'भिखारी' कइसे चलिहें, बिन इंजन के रेल  
 बिदेसी-जतरा भइल बिदेस के, धरहु राम पर ध्यान.  
 करिहें जानकि-जीवन प्यारी! तोर-मोर कल्यान.

सुन्दरी- त्राहि-त्राहि अबला कर स्वामी! मत करहु परिसाप.  
 सीता-राम गइलन कानन संग, जानत सकल जहान.  
 बिदेसी- अंधत के फल तुरते मिल, हरन भइल प्रिय नारि.  
 आजु तलक ले सुलि ल प्यार, गावत बेद पुकारि.  
 सुन्दरी- धन संघत, धन -धन करनी, जा जानत सकल जहान.  
 धन पतनी जो पति मुख पंकज, करत मधुप इव पान.  
 बिदेसी-त हमरा के नाहिये जाये देबू  
 सुन्दरी- नाहिये जाये देब.  
 बिदेसी - खूब सोच-बिचार ले तहरा भाई के गवना बा. हमहुं तोहरा के नइहर ना जाये देबउ.  
 सुन्दरी- नइहर छूट जाई ऊ पक्का.  
 हमरा के कइसे छोड़ के चल जाइब आंखि के सोझा से ना जाये देब.  
 बिदेसी-गीत  
 प्यारी- आवत में देरी ना लागी, जइसे घोड़ा के रेस. देस तनी.  
 कहना मानउ करब ना देरी, जल्दी से भेजब सनेस. देस तनी.  
 बल-बुद्धि से रोज कमाइब, नगद माल हरमेस. देस तनी.  
 कहत 'भिखारी' तूं सोच दूर करउ, करिहन कृपा महेस. देस तनी.  
 सुन्दरी-गीत  
 पिया मोर, मति जा हो पुरुबबा.  
 पुरुब देस में टोना बेसी बा, पानी बहुत कमजोर. पिया मोर.  
 सुनत बानीं आंख पानी देत बा, सारी भइल सराबोर. पिया मोर.  
 एक नाथ बिनु मन अनाथ रही, घुसी महल में चोर. पिया मोर.



कहत 'भिखारी' हमारी ओर देखउ,  
कतिना करीं निहोर पिया मोर.

(गोड़पर गिरतारी)

तूं त अनेरे नूं फूट-फूट गोड़ पर  
गिरतारू. अच्छा ल, अतना रोअतारू  
त हम ना जाइब . अच्छा इहिजे  
रहउ, हम तनी स्नान क के  
आवतानीं.

सुन्दरी- हं, रउवा कलकता मत  
जाइब. जबसे रउवा कलकाता जाये  
के नाम लेत बानी, तब से हमार  
भादो के दरियाव लेखा करेजा  
उल्ह-माल करत बा, हो दादा!

बिदेसी-अनेरे नू तहार करेज उल्ह  
-माल कइले बा. हम तहरा के छोड़  
के ना जाइब.

सुन्दरी- ए रवों, हम बाल्टी में पानी  
आन देतानीं, रउआ एहीजा स्नान  
करीं.

बिदेसी- स्नाने कइला ले बा. जाइब  
त स्नान करब, मंदिर में शंकरजी के  
पूजा पाठ करे के होई, जल चढ़ावे  
के होई.

सुन्दरी-ए रवों, हम जातानी फुलवाड़ी  
में से फूल तूर के आन देत बानीं.  
रउआ मंतर पढ़ देहब, हम जाइब त  
शंकरजी पर चढ़ा आइब.

बिदेसी- जब सक काम घर में  
मेहरारूए करी, त मरद घर में रहि  
के का करी. हटीं जी, हमरा के जाये  
दीं. कतना देरी से पेसाब लागल बा.  
पेसाब का मारे पेट फूलि के नर-गर  
भइल आवता.

सुन्दरी- एगो कंटिया आन देत बानीं,  
पेशाब क लेब. हम फेंक देब.

बिदेसी- आरे बउराहिन कहीं के ,  
नीमन आदमी कंटिया में पेसाब  
करेले.

इहे असगुन मनावत बाडू कि बेमार  
परस, परले-परले पेसाब करस.

बिदेसी- आरे पागल, पेशाब उतरी  
कि टीक प चढ़ जाई.

सुन्दरी-अच्छा त जाई, रउआ कर  
आई. जाई, हम खड़ा बानीं बाकी  
हमरा से छल मब करब.

(बिदेसी पेसाब करे का बहाने मंच  
का एक ओर जाताइन. कुछ देर तक  
प्यारी सुन्दरी उनका आवे के प्रतीक्षा  
करत बाड़ी. अचानक बहुत तेजी से  
मंच छोड़ देताड़ी.)

समाजी-(चौपाई)

पिउ के प्यारी राखन लागे. करि छल  
कछुक धीर देह भागे.

(मंच पर एक ओर से बिदेसी आ  
दोसरा ओर से दोस्त के प्रवेश)  
बिदेसी-(एगो दोस्त से) राम राम  
दोस्त.

दोस्त- राम-राम, बड़ा चंचल बाड़.

बिदेसी- हमरा घर के समाचार नइख  
नूं जानत.

दोस्त- कवन ममिला लागल, कहीं  
पिटइल हा.

बिदेसी- ना दोस्त राम! कलकाता  
जाये के मन भइल बा. औरत से  
सलाह लेबे लगनी हां त ऊ  
अठान-कठान डाल देली हा. हम  
खुदे चल देलीं हा. दोस्त से तनी  
सलाह लेबे अइलीं हां.

दोस्त- हमार राय लेबे अइल हां?  
बिदेसी- हं.

दोस्त- हम राय ना देब.

बिदेसी- काहें ना राय देब?

दोस्त- तूं काल्हे गवना करवल हो  
आ आजे जतरा कर देल? तहरा  
लेखा चपाट सवांग खोजलो पर ना  
मिली.

बिदेसी- का दोस्त राम, गवना  
करावेवाला बिदेस ना जाय?

दोस्त- रह-सह के जाला. तूं एके  
बेरा पावदान पर लात ध देल. तूं ना  
मनब.

बिदेसी- ना.

दोस्त- त अच्छा जा.

(बिदेसी चार डेग आगे बढ़ि के  
लवटतारे)

बिदेसी- (दोस्त से)दोस्त राम, जतरा  
ठीक रहे कि भेंट हो गइल. चाभी  
छूटले जात रहे. हई चाभी लीं.

दोस्त- चाभी कहां के ह.

बिदेसी- ई चाभी तीसरा अंगनई में  
कोनिया घर में अलमारी बा ओकरे  
ह.

दोस्त- जवन सोनपुर में किनाइल  
रहे?

बिदेसी- हं, अलमारी में

कपड़ा-लत्ता, गहना-गुरिया, सब कुछ  
बाजापते राखल बा. कह देब खूब  
पेन्हिहें, कुछ चिंता मत करिहें. खाये  
खातिर रबड़ी मलाई, जतना खाइल  
पार लागे, खाइल करिहें, जे में मस्त  
रहिहें. रामजी कथी के कमी देले  
बानीं.

दोस्त- (मुंह फेरी के) का बड़ले  
बा? (सोझा) गाय हव?

बिदेसी- हं, एगो गाय बिया. केराई,  
चोकर, भूँसी राखल बा, खूब  
खिअइहें.

दोस्त- जवन ससुरारी दहेज मिलल  
रहे.

बिदेसी- हं-हं. एगो सलाह बा. हमार  
घर राउर घर तनी दूर बा. कभी काल  
जा के हाल चाल लेत रहब.

दोस्त- हई चाभी ल. जुग जबाना  
खराब बा, लोग का कही?





बिदेसी- जब हमार राउर मन साफ  
 बा त केहू का कही?  
 दोस्त- अच्छा ठीक बा, जा.  
 बिदेसी- राम राम दोस्त.  
 (बिदेसी बाहर जातारन. प्यारी सुंदरी  
 मंच पर आवतारी. बिदेसी के दोस्त  
 मंचे पर बाड़न)  
 सुंदरी- (बिदेसी के दोस्त से) ए  
 रवों, उहां के देखलीं हां?  
 दोस्त- केकरा के?  
 सुंदरी- रउआ अपना दोस्त के?  
 दोस्त- हां देखलीं हां.  
 सुंदरी- कहां देखलीं हां, तनी बताई  
 ना.  
 दोस्त- टीसन पर देखलीं हां, टिकट  
 कटा के रेल में बइठल.  
 सुंदरी- ए रवों, जाई, भेंट हो जाई.  
 दोस्त- आरे ओहिजे बाड़न. झाझा  
 नियरवले होइहन.  
 सुंदरी- कुछ कह गइलन हा?  
 दोस्त- कहल छोड़ हमरा के पक्का  
 पहचान दे गइलन ह. हई ल चाभी.  
 देखिह रिंग ढिला बा, दबा के रखिह.  
 जानत बाडू चाभी कहां के ह, तीसरा  
 अंगनई में कोनिया घर बड़हू न, ओह  
 में अलमिरा बा.  
 सुंदरी- हं.  
 दोस्त-ओही में लूगा-सारी बा, खूब  
 पेनिह. गाय हव?  
 सुंदरी- हं, बिया.  
 दोस्त- गाय के अतना खियइह कि  
 कबज जाये.  
 सुंदरी- अच्छा.  
 दोस्त- खूब रबड़ी-मलाई आ  
 अनारकली बिस्कुट चाभल करीह.  
 सुंदरी- का हमरा से मजाक करतानीं!  
 दोस्त- दोस्त का जनाना से मजाक  
 कइल जाला?

सुंदरी- अब का करीं हो दादा!  
 समाजी- (चौपाई)  
 सुनी प्यारी पियऊ गये परदेस, तेही  
 छन हो गइल पागल भेस.  
 याद परे जब पति पयाना, सांस लेत  
 लागे धनु बाना.  
 रोवन लागे धूनी-धूनी छाती, सुझे  
 तनिक दिन ना राती.  
 (प्यारी सुंदरी विलाप कर  
 तारी)(गीत-1)  
 सुंदरी- करि के गइलन बलमुआ  
 निरासा, गवना करा के सइयां घरे  
 छोरी दिहलन.  
 गइलन बिदेस हमें करि के बेकासा.  
 निरासा...  
 सइयां के सुख हम कछुआ ना  
 जननी, बिचहीं बिधाता बितवलन  
 तमासा. निरासा...  
 सतदेव सत राख, अरज करती हूं,  
 दुख में दया कर शंकर जरा सा.  
 निरासा...  
 कहत भिखारी भगवती सहाय होख,  
 सइयां मिला के पुरा देहू आसा.  
 निरासा...  
 (गीत-2)  
 घरवा के ना तनिको उदेस कइलन,  
 जब से बिदेस गइलन साजन मोर.  
 गवना करा के सइयां घरे छोरी  
 देहलन गइलन पुरुबवा के ओर.  
 जबसे खत-खबर एको ना भेजलन,  
 हो गइलन निपटे कठोर.  
 दाढ़ी धरत रही पइयां परत रहीं  
 कही-कही लाख कंडोर. जबसे...  
 दया तनिक उनका नाही लागल,  
 भगलन बहियां झकझोर, सइयां के  
 सुख हम कछुओ ना जनलीं, देखलीं  
 ना काला चाहे गोर. जबसे...  
 चहुँदिसी चितवत बितत रात-दिन

कतहूं ना लउके अंजोर. कहत  
 भिखारी अब जिअल कठिन बा,  
 नयना से ढरकत बा लोर. जबसे...  
 (गीत-3 जंतसारी)  
 जबही पिया मोर गइलन पुरुबवा,  
 लिखी के ना भेजले एको पाति,  
 लिखी के ना भेजले एकउ पाति.  
 सइयां के रूप-गुण मनवा में  
 गुनी-गुनी, बइठल बितेला सारी राती.  
 बइठल बितेला सारी राती.  
 दुखदायी जरत बाटे छाती, आई के  
 पहुँचल तु बरसाती, आई के पहुँचल  
 तु बरसाती.  
 कहत भिखारी मोरा प्राण छूटत नइखे,  
 जिउआ कठोर बाटे गुलाम के नाति.  
 (चौबोला)  
 छोड़ कर चला परदेस, पियउ मैं क्या  
 कहूं इस बात के.  
 जोहती डगर दिन भर उन्हीं का, कल  
 परत नाहीं रात के.  
 महादेव? भगवान हे ! मरजाद रखूं  
 लाज जात के.  
 कहते भिखारी पियउ निरसु न तो  
 जीव होइहे घात के.  
 समाजी- (चौपाई)  
 तेही अवसर बटोही एक आये  
 तासो प्यारी दुख सुनाये.  
 पति गुन कही-कही रोअन लागी  
 सुनि बटोही के धीरज भागी.  
 (बटोही के मंच पर प्रवेश. बटोही  
 पूछ रहल बाड़े बाजा बजवनिहार,  
 सजवहिया से)  
 बटोही- ए बबुआ ढब-ढब!  
 समाजी- का ह बाबा.  
 बटोही- हम टिसन पर जाईब ए  
 बबुआ!  
 समाजी- ए बाबा, हइहे रास्ता सीधे  
 टिसन पर चली जाई.



बटोही- अच्छा ए बबुआ, इ बताव कि कलकाता के मसूल केतना बा?  
 समाजी- कलकाता के मसूल एह घरी तीस रुपया लागी.  
 बटोही- तीस रुपया लागी(चीहा के)? सवा रुपया में ना फरियाआई?  
 समाजी- सवा रुपया में त टिकटे ना मिली महाराज.  
 बटोही- बबुआ कम सुनेल, हम कहतानी रेल अउर तू कह तार टिकट.  
 समाजी- टिकटे न कटइब त रेल पर कइसे चढ़ब?  
 बटोही- का बबुआ, टिकट पर चढ़ा के रेल में धसोर दियाई?  
 समाजी- न महाराज, तीस गो रुपया देब त एगो टिकट मिली.  
 बटोही- टिकट कथी के?  
 समाजी- कागज के.  
 बटोही- कती मुटी के?  
 समाजी- हती मुटी के.  
 बटोही- हमरा के बुरबके समझ तार. तीस गो रुपया लागे जात बा, त नान्ह-बार के सुते बइठे लायक ना होई त लेके का होई?  
 समाजी- कवनो घर दुआर ह.  
 बटोही- अछा ए बबुआ, तीस गो रुपया टिकट में लाग गइल. रेल में केतना लागी बबुआ?  
 समाजी- रेल में एगो पइसा ना लागी.  
 बटोही- अछा ए बबुआ, रेल में हमरा एको पइसा ना लागी त टिकट के कउन काम बा? हम रेल में बइठ के दमदमवले चल जाइब.  
 समाजी- ए बाबा बिना टिकट लेले रउआ रेल में चढ़ब त दोबरी चार्ज लाग जाई न तो छ महिना जेल में खिचड़ी खाये के पड़ी.

बटोही-ए बबुआ, इ त घरो छोड़ला के बड़ा भारी रोग भइल.  
 समाजी- ए बाबा त खरचे-बरचे रउआ पास ना रहे त कलकाता का चल देलीं, पगड़ी बन्हा के, लाठी ले के, सेरवानी झारी के चल देले बानी.  
 बटोही- हम का जानत बानीं कि रेल में आ टिकट में एके हाली दाम बुकनी हो जाई हो?  
 समाजी- ए बाबा आजकल मसूल बढ़ गइल बा.  
 बटोही- बढ़ जाला अधेली सुका के एके हाली दहाना के दहाना?  
 (प्यारी सुंदरी खड़ा हो जा तारी)  
 सुंदरी- ए बाबा.  
 बटोही- का बबुआ कुछ कहब का?  
 समाजी- हम रावा से कुछ नइखी कहत, ओने बाड़ी भगतीन.  
 सुंदरी- ए बाबा.  
 बटोही- का बबुआ, कुछ कहबू का?  
 सुंदरी- हम पूछतानी जे रावा कहा जाइब?  
 बटोही- हमरा से? कलकाता हो बबुआ. ओह बबुआ से रेल के भाड़ा बुत्ता पूछ तानी, तोरा से कुछ ना हो, तु जा.  
 सुंदरी- ए बाबा, हम रउआ से आपन एगो दुख कहब.  
 बटोही- का भइया, हम कवनों ओझा-गुनी हई?  
 सुंदरी- ओझा गुनी के बात नइखे ए बाबा. जब से हमार पति परदेस चल गइलन तब से एगो चिठी-चपाटी ना भेजलन ह ए बाबा.  
 बटोही- ओ, पाठी भुलाईल बा! खूंटो में गाड़ के चरही में बान्ह देला.  
 ओही पर भला मच रहित्तीं.  
 सुंदरी- पाठी नइखे भुलाईल. हम

रावा से पुछ तानी कि रावा कहां जाइब. गइलन, तब से एको चिठी ना आइल.  
 बटोही- ओ, मालूम भइल, पेट बथत बा. का खइलू ह, फुलवरी?  
 सुंदरी- कछुओ ना ए बाबा.  
 बटोही- ओ, एक ढेबुआ भर आदि खा लिह.  
 सुंदरी- ए बाबा.  
 बटोही- जतना अयगुन होई, सब पचा दिही.  
 सुंदरी- ए बाबा, रावा सुनात नइखे.  
 बटोही- आ रे पागल, हमरा सुनाते नइखे? इ जुलमी दवा ह, जुलमी.  
 सुंदरी- हमार पेट नइखे बथत ए बाबा, जब से हमार पतिजी परदेस में गइलन तब से एको चिठी चपाटी ना भेजलन हो बाबा.  
 बटोही- मालूम भइल. ओ पाठी के सियार ले गइल बा. एगो कि दू गो रे? दु गो ले गइल होई त ए अकाला में राजे बुरुज भइल.  
 सुंदरी- हे? पाठी सियार नइखे ले गइल, जब से हमार स्वामीजी परदेस गइलन तब से एको जोह-जाह ना मिलल ह ए बाबा.  
 बटोही- ओ? स्वामी कवन चीज रे?  
 सुंदरी- ए बाबा, हमरा घर के सवांग.  
 बटोही- त अइसे नू फरिया के कहेला.तब से त बीस गो भेवंता का कइले बाड़िस? के ससुर ?  
 सुंदरी- ना  
 बटोही- भसूर?  
 सुंदरी- ना.  
 बटोही- देवर?  
 सुंदरी- ना.  
 बटोही- जाउत?  
 सुंदरी- ना.





बटोही- फेर दूर होले की ना. एक हाली कहेली कि हमरा घर के सवांग हवन, एक हाली कहेली कि केहू ना. इ बाबा के बुरबक समझ लेली. अब बुरबक के साथे बुरबक लेखा बतिअवला से फरियाई. इ बाता जे नाता में केहू लागे लहू.  
 सुंदरी- हं ए बाबा.  
 बटोही- के?  
 सुंदरी- ए बाबा पुरुष.  
 बटोही- ओ बुझ गइलीं, भतार.  
 सुंदरी- हं ए बाबा.  
 बटोही- तब ते हमरा से...  
 सुंदरी- ए बाबा, रउआ ओनिये कांवर जा तानी, तनी खोज-ढूँढ के पता लगा के रउआ लिअवले आईब ए बाबा.  
 बटोही- इ बताउ कि हम चलल बानीं नगद नरायन दाम कमाये कि देसा देसी तुम्हारा भतार खोजता हूं.  
 सुंदरी- ए बाबा, रउआ हमार देह नइखी देखत का?  
 बटोही- अउर बनल रे पागल. भला हम तोर देह देख के का करब रे? केकरा घर के सर सवांग ना देस-परदेस कमाये जाला? त का घर के बेकत आपन प्रान त्याग देली? हमहूँ त अपना घर के एगो सर सवांग हई जे दमदमवले चलल जा तानी बहरा कमाये खातिर.  
 सुंदरी- ए बाबा, पाव भर बनावल हमरा से ना घोटाय.  
 बटोही- ना हमार बाबू, का खाइल जात होई. ना ढूँढते होई ना घुसते होई. बुढ़ हो गइल बानी, हमार अकिलो कतहूँ हेराइल बा?  
 (समाजी का ओर) बबुआ रे हमरा बुझात नइखे कि एह उमर के जनाना

के आंखी के सोझा सवांग जो ना रहे त मन करत होई कि कुआं में गिर जाई.  
 सुंदरी- ए बाबा, चलीं कुछ अन-जल कर लिहीं.  
 बटोही- का अन-जल करीं रे? तोरा दुख के मारे ओटा खियाइ गइल बा. (बटोही बइठ तारे)  
 समाजी- (पूर्वी)  
 सिरि गनपति के चरन के सरन गहिं, कहि के सुनावत बानी गीत में बिदेसिया.  
 मचिया उपर धनी छतिया में हनी-हनी, पति के ध्यान ध रोवे प्यारी धनिया.  
 सुंदरी-(गीत तेवड़ा)  
 अब पत राख श्री भगवान!  
 करि गवन मोहिं छोड़ि भवन, पिया कइल पुरुष पेयान. अब पत...  
 ना मालूम केहि देस गइलन, तनी ना मिलत ठेकान. अब पत...  
 राम ना बिसरत एक छन, मोर भइल भा बयस जवान. अब पत...  
 अब ले कसहूँ धीर धरीं, हम करी के छाती पखान. अब पत...  
 कहे भिखारी पिया का पद में रहत निसिदिन ध्यान. अब पत...  
 (गीत पूर्वी)  
 करि के गवनवा भवनवा में छोड़ि कर अपने परइल पुरुषवा बलमुआ.  
 अंखिया से दिन भर गिरे लोर ढर-ढर, बटिया जोहत दिन बितेला बलमुआ.  
 बटोही- आरे हमार बाबू, चूप रह, गइल बाड़न त ओतहीं रहिहन?  
 अइहन नू?  
 सुंदरी- (गीत)  
 गुलमा के नतिया, आवेला जब रतिया

त तिल भर कल ना परत बा बलमुआ.  
 बटोही- आ का कल परो हो दादा.  
 समाजी- तु काहे रोव तार ए बाबा?  
 बटोही- बेचारी के दुख देखी के जीव ब्याकुल बा.  
 सुंदरी-(गीत)  
 तोहरे करनवा परनवा दुखी बाटे दया क के दरशन दे द हो बलमुआ  
 काई कइलि चुकवा कि छोड़ल मुलुकवा तू? कहल ना दिलवा के हलिया बलमुआ.  
 सांवली सुरतिया सालत बाटे छतिया, एको नाहि पतिया भेजवल बलमुआ.  
 कौना नगरिया डगरिया में पिया मोर, करत होईबे घरबास हो बलमुआ.  
 घर में अकेले बानी, इश्वर जी राख पानी, चढ़ल जवानी माटी मिलता बलमुआ.  
 बिरह के कुपवा, जोगनी का रुपवा में तोहरे के अलख जगाईब हो बलमुआ.  
 मदन सतावत बाटे, छतिया फाटत बाटे, अनवा जहर लेखा लागत बा बलमुआ.  
 जनती त ध के हाथ, छोड़ति ना तनी साथ, दिन-रात संगहीं में रहतीं बलमुआ.  
 ताकत बानी चारु ओर, पिया आ के कर सोर, लवटो अभागिनी के भगिया बलमुआ.  
 मोरा लेखा दुखिया के मुखिया ना जग के होई, भूखिया बा तोहरे दरस के बलमुआ.  
 निज हाथें तेगा धरी, गरदन काटी तरी, माटी में मिलायी के परइले बलमुआ.  
 कहत भिखारी नाई, आस नइखे



एको पाई, तोहरा से होखे के दिदार  
हो बलमुआ.  
(रोअत-रोअत बटोही के देह पर गिर  
जा तारी)

बटोही- कहब, कहब.

सुंदरी- बटोही से(गीत पूर्वी)

कहां जइब भइया? लगाव पार नइया  
तूं, मोर दुख देखि ल नेतर से  
बटोहिया.

सुन हो गोसइयां, परत बानी पइयां,  
रचि-रचि कहिह बिपतिया बटोहिया.  
छोड़ि कर घरवा में, बीच मजधरवा  
में, पियवा बहरवा में, गइलन  
बटोहिया.

जब तूं ओही देस, देखि ल निके  
कलेस, इहे सब हलिया सुनइह  
बटोहिया.

नइहर इअवा के तेयागी देलन पियवा,  
असमन जनिहे जे धियवा बटोहिया.  
कइसे के कहिं हम, नइखे धरात दम,  
सरिसो फुलात बाटे आंखी में  
बटोहिया.

कहत भिखारी, निके मन में बिचारी,  
देख चतूर से बहुत का कहीं हो  
बटोहिया.

बटोही(पूर्वी)

कइसन पिया तोर, करिया कि हवन  
गोर, सचमूच रुपवा बता द प्यारी ध  
निया.

जाइ के कहब हम, तोरा ले नाहीं  
कम, अधिका बुझाई जहां तक प्यारी  
धनिया.

मन में सबुर कर, जय शिव हरि हर,  
कहत भिखारी कारज होई प्यारी ध  
निया.

प्यारी- करिया ना गोर बाटे, लामा  
नाहीं हउअन नाटे, मंझिला जवान  
सामसुंदर बटोहिया.

घुठी पर ले धोती कोर, नकिया सुगा  
के ठोर, सिर पर टोपी, छाती चाकर  
बटोहिया.

पिया के सकल के तू मन में नकल  
लिख, हुलिया के पुलिया बनाइल  
बटोहिया.

आवेला आसाढ़ मास, लागेला अधिक  
आस, बरखा में पिया घरे रहितन  
बटोहिया.

पिया अईतन बुनिया में, राखी लिहतन  
दुनिया में.

अखड़ेला अधिका सवनवां बटोहिया.  
आई जब मास भादो, सभे खेली दही  
कादो, कृष्ण के जनम बिती अइसहीं  
बटोहिया.

आसिन महिनवा के कड़ा घाम दिनवा  
के, लुकवा समनवा बुझाला हो  
बटोहिया.

कार्तिक के मासवा, पियऊ का  
फांसवा, हाड़ में से रसवा चुअत बा  
बटोहिया.

अगहन पूष मासे, दुख कहीं केकरा  
से, बनवा सरिस बा भवनवा  
बटोहिया.

मास आइ बाघवा, कपावे लागी  
माघवा त, हाड़वा में जड़वा समाई हो  
बटोहिया.

पलंग बा सुनवा, का कइलीं  
अएगुनवां से, भारि ह महिनवां  
फगुनवां बटोहिया.

अबीर के घोरी-घोरी सब लोग खेली  
होरी, रंगवा में भंगवा परल हो  
बटोहिया.

कोईली के मिठी-मिठी बोलिया,  
लगेला करेजे गोली, पिया बिनु भावे  
ना चइतवा बटोहिया.

चढ़ी बइसाख जब, लगन पहुंची तब,  
जेठवा दबाई हमें हेठवा बटोहिया.

मंगल करी कलोल, घरे-घरे बाजी  
ढोल, कहत भिखारी खोज पिया के  
बटोहिया.

(प्यारी सुंदरी आपन बिपत्ति गावते  
जात बाड़ी)

(गीत-1 झूमर)

गवना करा के सइयां, छोड़लन  
गइलन परदेश, कइलन ना प्यारी के  
उदेश. परदेश.

हरदम रटत बा पिया, कहि-कहि  
पिया परदेश गइलन, फिकिर परल बा  
हरमेश. परदेश.

युवापन बीत जइहन, कबले अइहन,  
परदेश गइलन, जात बाटे छतिया में  
गेस. परदेश.

सुंदरी-(गीत-2)

पिया मोर गइलन परदेस ए बटोही  
भइया.

रात नाहीं निंद, दिन तनी ना चैनवां,  
ए बटोही भइया.

सहतानी बहुत कलेस ए बटोही  
भइया.

रोअत-रोअत भइलीं हम पगलिनियां  
ए बटोही भइया.

एको ना भेजवलन सनेस, ए बटोही  
भइया.

नाहके जवानी हमके दिहलन बिधाता,  
ए बटोही भइया.

कुछ दिन में पाकि जइहन केस ए  
बटोही भइया.

कहत भिखारी तोहरा गोड़ के  
लउंड़िया, ए बटोही भइया. कर पिया  
के कसहूं उदेस ए बटोही भइया.

(गीत-3 बिरहा)

चढ़ल जवानी जोर पियऊ हो गइलन  
कठोर, हमें छोड़ के लोभइलन  
परदेस!



छोड़ के लोभइलन परदेस बटोही  
भाई, गवना करा के दिहलन घरवा  
बइठाई.  
का कइलीं कसूर जे परदेस गइलन  
पराई,  
एकर कछुओ हालत बालम ना  
देहलन सुनाई.  
पियऊ का बियोग में प्रान छूटि जाई,  
हमरे सिरवे बितत बा, ना दोसरा के  
बुझाई.  
लहकत बा करेज आ के अगिया के  
बोताई?  
कहे भिखारी तनिक पिया के दरसन  
द कराई.  
हमें छोड़ के लोभइलन परदेस.  
(गीत-4)  
दोड कर जोरि अरज करत हूं, सुनहु  
बटोही मोर भाई.  
करउं प्रनाम, काम अड़बड़ बा, सुनहु  
बटोही मोर भाई.  
छल करिके पिया पुरुब देस में, चलि  
गइलन बिसराई.  
प्रान पिया बिनु कुछु ना सोहाता, उर  
में दाह अधिकाई.  
बाट चलत में पियरी छाई, पढ़त  
सुग्गा उड़ी जाई.  
अपने चलत ना अब लगी केहू के,  
कुछउ कइली बुराई.  
ना जानी केहू हेतू बिधाता, दिहलन  
डबल सजाई.  
धरम के भाई, होख सहाई, का-का  
दुख सुनाई.  
स्वामी जी के चरन देखब त, नया  
जनम होई जाई.  
पिया-पिया, रटी-रटी प्रान तेजब हम,  
अब ना बिपत्ति सहाई.  
कहे भिखारी पिया प्रेम के फांसी,  
दिहलन गले लगाई.

(प्यारी सुंदरी रोअत-रोअत चल देत  
बाड़ी. एकरा बाद बटोही भी चल  
देत बाड़न. दूसरा ओर से मंच पर  
आके रंडी आ बिदेसी तास खेलत बा  
लोग. तब तक घुमत-घुमत बटोही  
पहुंच जात बाड़न.)  
समाजी-(पूर्वी)  
चली भइलन राहे-राही, बनी के अधि  
क दाही, पुरुब का देसवा में पहुंचे  
बटोहिया.  
नगर सहरिया वो हटवा बजरिया में,  
करत बिदेसी के उदेस हो बटोहिया.  
लोक से भरल मेला, कतहुं ना  
लउकेला, माथ पर हाथ धरि के  
झंकेला बटोहिया.  
रामजी के दया भइले, एक ओरी  
चली गइले, खुली गइले पलक दइव  
के बटोहिया.  
बइठी के सलोनी के पास, खेलत  
रहलन तास, सन्मुख पड़ल नजर  
बटोहिया.  
चिन्ही कर मने-मन, होई गइलन ध  
ने-धन, प्यारी के खबर कहे लगलन  
बटोहिया.  
बटोही(बिदेसी से)- सुनी ले बिदेसी  
बात, कइल तू बहुत घात, अबहूँ से  
चेत दिन-दुनियां बिदेसिया. तोर  
कुलवंती नारी, रोअ तारी पुका फारी,  
काटी के तू डाली दिहल कुआं में  
बिदेसिया.  
ध्यान ध के पति पर, फेंकरी-फेंकरी  
कर, मनी बिनु फनिक बेहाल बा  
बिदेसिया.  
जल्दी से घर चेत, दुखित नारी के  
हेत, अतने गरज के अरज बा  
बिदेसिया.  
कहत भिखारी फुलवारी के उजारी  
देहल, पुत होके भइल जमदूत तु

बिदेसिया.  
बटोही- दोहा  
सुनहूँ तांत एक बात तूँ, जुआसर को  
त्याग.  
कहना मान नाहीं तो, कुल में लागी  
दाग.  
(चौबोला)  
कुल में दागी लाग जोग यह, मानहूँ  
बचन हमार  
आगी लगावहूँ एह नौकरी में, बजर  
परहूँ जुआसार.  
तोरी धनी भइली जस, बन के  
कोइलिया, करे पियु-पियु तोही के  
पुकार.  
पथर के छाती तोहार हउवे बिदेसिया,  
ना तो फाटत तुरंत दरार  
बटोही- (गीत लोरिकायन के लय)  
अइल कलकातावा त खतवा भेजइत  
ताबर हो तोर.  
रुपया भेजइत, मनीआडर से, गंड्यां  
में होइत सोर.  
रुपया खोइंचवां में लेइकर, गुनवा  
गइति हो तोर, दुआरा पर रहितीं त,  
केहू नाहीं देखित करिया गोर.  
सुनरी का लोरवा से चुनरी होखत बा  
सर हो बोर.  
कहत भिखारी चेतह अबहूँ से, करत  
बानी निहोर.  
बटोही-(गीत- लय कुंवर बिजयी  
के)  
बबुआ राम नाम कर सुमिरनवां हो  
ना.  
बबुआ लागि गइल नीमन लगनवां हो  
ना.  
बबुआ खोजी कर भइलीं हरनवां हो  
ना.  
बबुआ सहजे भइल दरसनवां हो ना.  
घर में रोअत हवहूँ भितरे जननवा हो



ना.  
तेज देले बाड़ी सब आभरनवां हो ना.  
नइखे गतर पर एको गहनवां हो ना.  
लुगा पहिरत बाड़ी फाटल पुरनवां हो ना...

बटोही(गीत आल्हा के लय)  
भजिल रामचंद्र के नाम, तुरंत बिदेसी  
चल जा घर के, देरी करे के नइखे  
काम.

दिन रात चाहे घरी पहर के, देखत  
नइख निमन जबुन, बहुत दिनन से  
रहले फरके, लउकी तभी होई दिदार.  
लगिहन नयना से लोर ढरके...

बटोही-(लय पचरा)  
बात एक सुनि ल बिदेसी भइया,  
घरवा से चलि अलहूँ, तोहार जनाना  
के दुखवा देखि के, सुनी के  
पतिअएलहूँ टिसन पर आइ बिदेसी  
भइया, रेल पर चढ़ी गइलहूँ...

बटोही(लय पचरा)  
दुल्हा बनि के गइल बियाह करे,  
बान्हीं के मथवा पर मउरिया. हथवां  
धरी के लेइ अइलें, बनाई ले  
बहुरिया. तेकरा के छोड़ी के परइल  
अइल बबुआ देस दुरिया...

ए बबुआ हम तोहरा घर से आवत  
बानीं, ए बबुआ, तोहार बेकत के  
दुख ना देखल गइल ह त दू गो  
मजदूरा लगा के रोपवले आवतानी ए  
बबुआ.

बिदेसी(पूर्वी)  
बान्हीं के पगरिया रगरिया मचाव तार,  
कवना नगरिया के हव तू बटोहिया.  
हमरी जननवा, मकनवा भितरवा में,  
साधी कर रहेली भवनवां बटोहिया.  
चिन्हीं ले लै कइसे, बताव हमें जइसे  
तूं, जनियां मकानवां भितर क  
बटोहिया.

बटोही- कायापूर घर हउवे, पानी से  
बनावल हउवे, अचरज अकथ ह नाम  
हो बिदेसिया.

चलली बहरवा से, कनवा परल मोरा,  
सती का बिपत्ति के मोटरिया  
बिदेसिया...

सुनिकर कनवां में, गुनिकर मनवां में,  
कहत भिखारी घरे चली जा  
बिदेसिया.

समाजी- (पूर्वी)  
अतना सुनत बात, मुरछा बिदेसी  
खात, गिरी गइले धरती धड़ाम से  
बिदेसिया.

जोस नइखे तनवा में, होस नइखे  
मनवां में, प्यारी दुखी सुनि के बेहोस  
बा बिदेसिया.

पतरी तिरियवा, लपकि ध के पियवा  
के, अंचरा से करेली बेयार हो  
बिदेसिया.

ताक तारन आंखी खोली, मुंह से न  
आवे बोली, धिरिजा धरा के पूछे  
रंडिया बिदेसिया.

बटोही- एके हाली अइसे हड़बड़ा के  
गिर गइल, सब कपड़ा लेटा गइल.

काची से झारीं, ना इटा बा ना पखल  
बा, कह ना बबुआ के ताखी  
लोघड़ा के हेइजा भागल बा बड़  
ताखी बनवले बाड़ बबुआ.

जूना-कुजूना पाव भर सतुआ घोर के  
खा सकेल.

बिदेसिया- ए बाबा रवा तनीं बइठीं.  
(बटोही बइठ तारें अ बिदेसी घर का  
भितर जा तारें)

रंडी- (चौपाई)  
मन में कष्ट भइल, कह काहे, तन  
कुछू पीर की घर का दाहे.

बिदेसी-(दोहा)  
तन के पीर कुछू नाहीं, लागी घर के

आह, प्यारी के दुख समुझ के होत  
करेजा दाह.

रंडी-प्यारी कवन?

बिदेसी- घरवाली.

रंडी- हम हई बनवाली?

बिदेसी- हं, तुम भी हो.

रंडी- हम हैं कि वह?

बिदेसी-दुनों.

रंडी- क्या आप यहां रहना चाहते हैं  
कि घर जाना?

बिदेसी- घर जाना चाहते हैं.

रंडी- ए रवों, जब रावां घरहीं जाये  
के रहे त हमार हाथ-बांह काहे के  
धइलीं?

बिदेसी- तहरा के कउनो हम छोर दे  
तानी?

(बटोही से ) ए बाबा.

बटोही- का बबुआ आ गइल, कउनो  
प्रकारे से अपना घरे-दुआरे जइबे कर.

बिदेसी- ए बाबा, हम तो अपना घरे  
जइबे करब, रउआ बहुत देरी भइल,  
रउआ कुछू अन-जल करीं.

बटोही- हमार त अन-जल कइल  
ओही दिन बिसर गइल, जउना दिन  
ओकर दुख देखनीं.तीन दिन त हमरा  
झाड़ा फिरला भइल.

बिदेसी- का कहीं ए बाबा?

बटोही- का बबुआ, मिजाज ठीक बा  
नु.

बिदेसी- जीऊ तो ठीक बा, रउआ से  
कहे में लाज लागता.

बटोही- कवन अइसन बात बा कि  
तोहरा कहे में लाज लागता.

बिदेसी- ए बाबा, हम एही से नइखीं  
कहत कि रावा कहीं कह देनीं.

बटोही- का बबुआ, हमरा के एके  
हाली पुरान लुबुकी समझ गइल. पाव  
भर अन पचाव तानी, एक लोटा जल



पचाव तानी, एगो बात हमरा सेना पची ह? का जाने मने ह, कहला बिनु न रहाई तो उहो एकांत जगहा में कहब बबुआ, जगल टिपा लेले बानीं. एतवार के दिन हवड़ा पुल पर बइठ के कहब, जे ना कोई रही, न । सुनी.

बिदेसी- ए बाबा, घरे से परदेस अइलीं त अउर एगो सादी एहिजा कर लेलीं.

बटोही- ए बबुआ, इहे निमन काम कइल. लायक बेटा के एही काम ह कि जहां जाये उहां कुछ हाथे लगा लेबे. कउनो प्रकार से तू आपना घरे चल जा.

रंडी- ए रवों, इ के ह?

बिदेसी- ना, तु घर में रहबू!

बटोही- ए बबुआ, इ के ह?

बिदेसी- इहे जनाना ह, जवना से हम सादी कइलें बानी.

बटोही- खुद उहे हइले हई, हट बउराह, तनी हमरो के देखे द.

रंडी- ए रवों, चलीं घरे, लइका रोवत होइह सन.

बिदेसी- ना ओनहीं रहबू?

बटोही- का बबुआ, इनका देह से लड़िका-फड़िका बाडनस.

बिदेसी- हां ए बाबा.

बटोही- क गो बबुआ?

बिदेसी- दु गो ए बाबा.

बटोही- खास इनका देह से दुगो?

बिदेसी- हं ए बाबा.

बटोही- तहरा देह से अभी एको न इखे?

बिदेसी- आ, एके बतवा नू भइल बाबा?

बटोही- हम उनका के बड़ा फरहर देखतानी ए बबुआ. खास टटुआनी के

कान कटले बिया. आ फरहरे ले ना ए बबुआ.बड़ा रहनदार देख तानी. बिदेसी- हां ए बाबा, रहन सुभाव देखी के हम मोहा गइनीं हां.

(रंडी के गाना)

नाहीं कहब जाये के, हम रहब केकरा पास. राजा!

जहां-जहां जइब, तहां जवरे लियवले चल.

बटोही- तू कहां जइबु सहबाला?

रंडी- माई-बाप छूटल आखिर भइल उपहास राजा. नाहीं...

बटोही- उपहास के करी हो? उपहास करी से अपना घरे रहे.(बिदेसी से)

बबुआ जवना सती के तु हाथ बांही धइल, ओह सती के तू छोड़ देल, एह में अझुराइल बाड़, इ जादू जानेले, कवनो प्रकार से घरे चली जा.

(रंडी खड़ा होतिया)

बटोही- बबुआ, मुंह पर के बड़ाइ करल निमन ह. इनकर सारी कइसन बा, बेलाउज कइसन बा, सिंगार-पटार कइसन बा?

रंडी- जियते हमें ना पइब, पाछे खानी मोंह खइब, प्रान तेजब अभी ला के गर्दन में फांस, राजा! नाहीं...

बटोही- फांसी काहे लगइबू हो, तू होसियार हो के गंवार भइल बाड़ू?

(बिदेसिया से) बबुआ, बियाह में एगो कलसा धराला, कलसा के नीचे बालू बिछावल जाला से मालूम होला कि जलवामयी हवन तवना पर जव बिछावल जाला. उ कच्छप नारायण हवन, तवना पर से कलसा धइल जाला. मालूम होला कि समुद्र हवन, छीर समुद्र में बिष्णु भगवना रहेनं, एसे ओह में कसइली डाल दियाइल

. बिष्णु भगवान के साथ लक्ष्मी रहेली. आम के पल्लो कलसा में नीचे डंटी के दियाला, तवना पर से चार मुंह वाला दिया धराई जाला, उ ब्रहमा हवन, अतना गवाह के सामने जवना सती के हाथ बाहीं धइल तू ओह सती के तू छोड़ देल. एकरा में आके अझुरा गइल. एकरे जामल तोहरा मुंह में आग दिही. कउनो प्रकार से तू घरे चल जा.

रंडी- तिरिया के बध होई, पातक से धरम खोई, सुनि ल लिखल बा एकर मान विश्वास राजा! नाहीं...

बटोही- जाये द, बीस दिन में लवट के चली आई.

बिदेसी- तू रोवते-रोवते आपन प्रान देबू.

बटोही- आ हा तू ओकरा गोड़वा पर गिर पर कह हो तोहरे अइसन आदमी देस-परदेस में अस्थीर नइखे रहे देत. (रंडी से) गजबे बाड़ू भाई, तनी भर जाये देला त.

रंडी- कहत भिखारी चोला साबसी जनावत बाटे, कहां के दो पगला

बटोही बदमास, राजा...

(रंडी बटोही के माथ पर हाथ चला दे तारे)

बटोही(बिदेसी से)- ए बबुआ तनी हमरो के मार लेबे द.

बिदेसी- ना ए बाबा.

बटोही- मेहरारू होके मरद पर हाथ चलवले बिया, एकरा मारहीं के रहल ह त इटा चला के मार देले रहित. पथर चला के मार दीत चाहे गरासी से काटी के भाला से भोंकी दीत. इ हमरा के माथ पर मरले बिया, तू नइखे जानत कि हाथ से माथ पर मरला से अदमी परले पेसाब करेला.



उ ढेर मरले बिया, हम थोरहूँ मारब जरूर. ना दादा, गुंडा से हमार नाम कटी जाई, पगरी हमार हलुक होई जाई.भाई!

बिदेसी- आहा, जाये ना दीं.  
रंडी- सैयां सुरतिया बिसार के, भाग चला किस देस.  
हमसे कुछ ना चूक भई, जानसु उमा महेस.

बिदेसी(दोहा)- प्रान-प्यारी धीरज ध रु, मत सोचतू मन माहीं.  
बहुरि आई लबटाइहीं, उहां बसब हम नाहीं.

रंडी-(गीत)  
पिया पिरितिया लगाइ के , दूर देस मत जाहु. कहे भिखारी भीख मांगी के, हम लाइब तुम खाहु.  
प्रातकाल के दरिसन करिके, भिक्षा मांगकर लाउंगी. अपने हाथ से सुंदर भोजन, नितहीं तुझे कराउंगी.  
आहा, हे प्रान प्यारे, नैना के तारे, कहूँ जा मत बिसारे; केवल आसरा है तिहारे(गोड़ पर गिरत बारी)

बिदेसी- कही बात तुम साच कामिनी! हमसे कहत बनै ना.  
पर एक कारन अहै ताहि में कहे बिनु जात रहै ना.  
बान समान चोटी मोहिं लागत घरनी प्रान तजै ना.  
कहे भिखारी यह दुख भारी हमसे जात सहै ना.

रंडी(पूर्वी)- सुनि कर बतिया, कांपत बाटे छतिया, तू दोसरा के मतिया में परल बलमुआं.  
बटोही- फेर हमार नाम धराए लागल.  
रंडी- घरे चली जइब, लवटि के ना अइब तू, आस तूरि के सब नास कइल बलमुआं.  
जइब भवनवां परनवां तेयागि देहब,

पाका जान जनिह कहनवां बलमुआं.  
असल के हई बेटी, इरिखे फंसल बा नेटी, कर तूरी घर जनि जइह बलमुआं.

अइसन रहिया उपहिया के बात सुनि, मनवा उदासि मत करिह बलमुआं.  
कहत भिखारी नाई, तेजि देलीं बाप-माई, कवन उपाय हम करीं हो बलमुआं?

बटोही(बिदेसी से)- रंडी में ना कुछ बाटे, कुत्ता जइसे हाड़ चाटे, एको नाहीं घाट तूहूँ लगब बिदेसिया.  
छोड़ि द अधरम, मिजाज के नरम तू, मनवां में करि लेहूँ सरम बिदेसिया.  
आवतानी घरी देखि, चली जाई सान-सेखी, डूबी मर घुठी भर पानी में बिदेसिया.  
आगि लागे धन में, पिलेग होखे तन में, ओ मति केहू रंडी फन में बिदेसिया.

जाके प्यारी धनियां के हर ल हरनियां के, छोड़ी द कुचलिया रहनियां बिदेसिया.  
कहत भिखारी सरदारी अतने में बाटे, पनियां बहाने बोधा जनियां बिदेसिया.

रंडी-(गाना)  
तोहे जाने ना देहौं पियारा?  
जो तुम चाहो कतहुं को जाना, हति देहूँ प्रान हमारा. तोहे...  
रसिक पिया मोहे त्यागि न जाओ, इतना करो उपकारा...  
बिदेसी-(गाना) मान-मान तू प्यारी हमार कहना.  
मुलुक में जाइब, जलदि फिर आइब, हमरा त घर बा इहे अंगना.  
जाइब त भर पेट दाना ना खाइब, इहवां लागल बा बहुत लहना.  
राति के कवनो भाति से ना सूतब, तोहरे में अधिक लागल चहना.

चाहे भिखारी खराब होई जाइब, तोहरे त प्रेम के पेन्हब गहना.  
रंडी-(गाना)  
हमरा के पिया बिसरइह मति हो.  
बहुत दिनन से आसा लागल पिया, झुठहूँ के जिया हहरइह मत हो. हमरा के पिया...

बटोही- मान बतिया बिदेसी, तू चल जा घर के.  
प्यारी के दुख मोसे क हलो ना जात बाटे...

कहत भिखारी अरज मोर अतने बा, अबहूँ से चेत दीन-दुनियां से डर के. मान बतिया बिदेसी...

(गाना-2)  
ए बबुआ घर चली जा तुरते, ब्याही सती के तेजल; कह कवना कसुरते...

कहत भिखारी जा के रह देश लुर ते बिदेसी(गाना)  
ए प्यारी हो घर जाये द मोहि के जाइब त जल्दी आइब, ह भूलब ना तोहिके.

बाट जोहत नित घरनी एक फिकिर ओहिके.  
बाट जोहत नित घरनी एक फिकिर ओही के...

रंडी(चौबोला)  
माता,पिता,भाई,भौजाई, तोहरे कारन राजा!  
गेह-नेह सब सखी जाति-कुल, तेजलीं सकल समाजा.  
नीति बिचारि के देख धीरज धरि, प्रेम में होत अकाजा.  
कहे भिखारी राख प्रानपति, बांह गहे कर लाजा.  
बटोही- तनी बोल बिदेसी, तू जइब की ना?  
बहुत दिनन से कुमति कमइल, सुमति





के सुपथ चलइब कि ना?...

(रंडी से) बाड़ी वाली बतिया तूं मानल हो, मत कर तू बे-बिचार. थोड़े कहे से तू पूरा समझिह, निमन बना ल रहनियां हो तूं त खूदे होसियार...

कहत भिखारी मरत बिया बिरहा से, सुंदर बाड़ी प्यारी धनियां हो जिनकर हउअन भतार.

रंडी- हट जा फजीहत करा देहबि तोहही के (बटोही के धसोरत) फुहरी-फुहर पेठनियां पेठवलस बुरबक बटोही के.

बटोही- ढेर परहेजल जीव के काल हो गइल, रेसमी चादर फटल कि हाथे गोड़े सीकर भर देव.

रंडी- हमरा से ज्यादा चटाका ना होइब, सिखाव मत मोहि के.

सइयां के सेवा से सुंदर बना दिहलीं तेल घीव से बोहिके.

(बिदेसी के बटोही हटा देतारे. बिदेसी मंच पर से जा तारे)

चोटही बेसरमी का लाज नइखे लागत, पढ़ाव जाके ओहिके.

कहत भिखारी तूं जाइ के कहिह भतार करिहें जोहि के.

(दोहा) गंगा नहा के विपर जेवा के सकल मिटाहु दोष.

गया में पिंडा पार के करहूं पितृ के तोष.

समाजी- बड़ धोबिया पेंच मरलीं हां बाबा.

बटोही-तोहरा भुभुन फुटे से डेरइली हां बबुआ.

रंडी- कहां गये मोर खेलवना छोड़ि के? पियवा पिरितिया काहें बिसार दिया नान्हें के जोर के?

बटोही- का बबुआ, बिदेसी चल गइलन? साफा?

समाजी- हं चल गइले.

बटोही- इहे कइल चाहत रहे. तनी हंसी मजाक कइलीं हां. जाये के बेरा बोल बतिया लेला. ओह पर खखनल बाड़ी.(रंडी से) तोहरा भलाई छोड़ के बुराई ना कइलीं हां. अइसन लंगा-लूचा से देह बचा के रखे के चाहिं.अच्छा गइलन त हम बानी नू? समाजी- का बाबा?

बटोही- हमरा अइसन बुढ़ के कलकाता में नोकरी ना मिली का? खाटा-खट हप्ता मिले, चुड़ीदार कुरता सियाई, सेनगुप्ता धोती लियाई.गोड़ के मोजो. भउजी के अइसनके ठाट रही. साया किनाई पियर दग-दग. कुरती लियाई करिया कुच-कुच. साड़ी किनाई लाल भभूका. किरपिन रहलन, हम पूछ के खिआइब डबल कि सिंगल.

(बटोही बइठ जा तारे)

रंडी- चलती बार पिया हमसे ना बोला, चला मुख मोर के.

बटोही- ए बाजा वाला.

समाजी- का रे बुढ़वा? का रे बुढ़वा?

बटोही- इहे बोली ह? मुंह से जी नइखे आवत?

समाजी- जी के रउआ काम करत बानीं.

बटोही- कवन जबून काम देखत बाड़?

समाजी- देख तानी मेहरारू खिंच-खिंच के मारत बिआ.

बटोही- ए बुरबक! पढ़ले नइख देवता पर कुत्ता पेसाब क देला. लोग लिप पोत के अंकुरी -पूरी चढ़ा के बांट के खा जाला. तोहरा अइसन गंवार के के कहल करी?

समाजी- खूब कुटा.

बटोही- हमरा बीच में बोलो मत.

रंडी- हम उनुका बिनु जियब नाहीं पिअब बिस घोर के.

(बटोही के घसकल)

समाजी- बाबा भगलन हो.

बटोही-(फिरि के)बबुआ हमरा के डेराहूँक मत समझ. एक मोटरिया में तरुवार पिजा के धइल बा, हई देख तार नूं लाठी, सादे-सादी नइखे, गुप्ती बा. उहो महुरावल बा. एह से कालो से डर ना लागे.(एही बीच में बटोही चल जा तारन, रंडी के विलाप चलत बा, बिदेसी मंच पर आवतारन)

(बिदेसी रंडी के समुझावतारे)

तूं खायेके बनाव, तले हम आवत बानीं.

(कहि के जा तारन)

समाजी-(रंडी से) उ गइलन, बुढ़वा का दो सिखा देलस हा.

रंडी- ठीके कहनी हां, बुढ़वा आइल तब से मन उचटल लागत रहे, अच्छा हमहूं चल जात बानीं.

(रंडी अपना लइकन के साथे सामान के पेटी लेके निकलतारी)

बाड़ीवाला- का हो चल देलू?

रंडी- हमरा रउआ कवनो बात

बा?(बाड़ीवाला जाये के मना करत बा बाकि रंडी अपना सर सामान के साथे चल देत बाड़ी.राह में उनकर सब सामान डाकू लूट लेत बाड़न स. दोसरा ओर से बिदेसी मंच पर आ जा तारे आ समाजी से अपना घरवाली के पूछतारे)

बिदेसी- बगल से हमरा घरवाली के बोला दीं.

समाजी- गइली, एहिजा नइखी.

बिदेसी- कहां तक गइल होइहें?

समाजी- टीसन तक.

बिदेसी- भेंट हो जाई?



(बाड़ीवाला आ साहुकार आ के घर  
भाड़ा के तगादा करत बाड़े. भाड़ा आ  
कर्जा ना चुकवला खातिर रक-झक  
होता, तोर-मोर होता. बाड़ीवाला आ  
साहुकार बिदेसी के कपड़ा उतरवा  
लेत बाड़े. बिदेसी एक गमछी पेन्ह  
के घर जात बारे)

(रो रो के गावत बारे)

का बहाना करब घर जा के?

पातुर के धन चातुर देके आप रोवत  
पछताके.

बहुत कथा इतिहास सिखावल ना  
कइलीं बुढ़वा के.

हालत काइल भई पिया तोरी पूछिहन  
जब जोरु धा के.

कवन जवाब देहब प्यारी से, मन में  
रहब सरमा के.

कहत भिखारी भिखार होइ गइलीं  
दौलत बहुत कमा के.

(गावत गावत मंच से बाहर गइला  
पर दोसरा ओर से रंडी अपना लड़का  
साथे फाटल-चीटल रुप में गावत आ  
रहल बाड़ी)

रंडी-(गाना-1)

रास्ता कवन बिदेसी के घर के?

दुख के हालत बड़ सवतिन से रोअब  
कहब गोड़ पर के.

प्यारी बिदेस, देस पिया भगलन, अब  
हमार लिही खबर के.

करब टहल महल के निसि दिन,  
देखब नजर भर-भर के.

कइसे प्रान रहि प्रितम बिनु छोड़ि  
दिहलन बांह धर के.

लुगरी पहिरब, सतुआ खाइब, निजे  
मजूरी करि के.

कहत भिखारी सारी धन लूटलस  
डाकू नतीजा कर के.

(गाना-2)

सब दिन के बरबाद भइल धन, चल  
गइलन घरे छोड़ि के सजन.

आज तलक कछु काम न कइलिं  
कइसे पोसइहन लइकन.

भूसन-बसन रहल कछुओ ना, नाहीं  
रहल बरतन.

राम नाम कह कहत भिखारी, नाहीं त  
भइल चउथा पन के.

(गाना-3)

ए किया हो रामा, पियऊ के मतिया  
के हरल हो राम.

ए किया हो राम, कहिया के पपवा  
आ के फरल हो राम.

ए किया हो राम, एह से बा निमन  
हमार मरल हो राम.

ए किया हो रामा, आजुए से उढ़री  
हमार नउवां पड़ल हो राम...

(बेटा के रो-रो के गाना-1)

अब ना जीअब हमार महतारी.

दाल-भात, घीव पापड़, रोटी सपना  
भइल तरकारी...

जाग दाता केहू भोजन करा द, हम  
बानी मूरत चारी.

कहत भिखारी हमार देखि दुख कब  
ढरिहन गिरिवरधारी.

(गाना-2)

अब हमनी के कटाइल गला.

ना फुफुहर, ना ममहर गोतिया, ना  
बहनोई ना ससुर साला.

समय पाई हित मुर्दई भइलन, घर से  
निकाल देलन बाड़ीवाला.

बड़ अनरीत गीत लागत बा, बेटा से  
बाबूजी कइलन काला.

दास भिखारी कहत मन चेत,  
राम-राम कह लेके माला.

(रंडी अपना लइकन के लेके मंच  
पर से हट तारी, मंच पर प्यारी सुंदरी  
के आगमन)

प्यारी सुंदरी-(गीत खेमका)

हमरा के सांसत कइके, परदेशवा  
गइलें बेइमान.

कवनों त चोटही से प्रितिया लगवले  
होइहें, अतने के बड़हन गुमान.

अपने पान खाय मुस्कात चलत होइहें,  
नैना से मारत होइहें शान.

हमरा हाय हो अब दुख ना सहात  
बाटे, अधजल में कइ गइले प्राण.

सांवरी सुरति बिनु रहल कठिन बाटे,  
हमरा पपिनियां के जान.

कहैं भिखारी राम तप कहां गइले  
बलमुआं, निसिदिन कुहुकत प्राण.

(गीत-2)

चलने के बेरिया कह ना पियऊ एको  
बतिया.

हमरा के छोड़ि के गइले पुरुबवा,  
केइ मारल मतिया...

(गीत-3)

नेह लाके कहवां तूं गइल सजन,  
जहिया से पिया तजि गइल पुरुबवा...

(गीत-4)

स्वामीजी सपनवां भइलन हो रामा...

(गाना-5 विलाप)

हमरा के सासत करि के, परदेसे  
गइलन बेइमान.

सांवली सुरत हमरा दिल से ना  
बिसरत, लागल सुरतिया के बान...

(गाना - सोरठी)

कवने अयगुनवां पिया हमें  
बिसरवलन, पिया हमें बिसरवलन हो  
कि पिया के मतिया बउराइल हो राम.

..

कहत भिखारी पिया फांसी देके  
भगलन, पियवा फांसी दे के भगलन  
अधजल में मनवां बा टंगाइल हो  
राम.

(दोहा)



तन,धन,धाम,धरनि,पुर,राजू, झूठे सकल जवाल.

चरन पादुका पिया के लेके, सती होखब तत्काल.

समाजी-(चौपाई)

इहां के बात इहां रह गयऊ. बिचहीं में कुछ लिला भयऊ.

दोस्त बिदेसी के घर आये. प्यारी से कुछ हाल सुनाये.

(मंच पर बिदेसी के दोस्त देवर के रूप में आव तारे)

देवर- भउजी काहे रोवत बाडू?

भइया परदेस गइलन त हम बानी नूं?हमरा से रुपइया, गहना, कपड़ा जे कुछ खोज से हम देब.

देवर-(सवैया)

भउजी अफसोस तेजो मन से, कुछ हुकुम देहु सबे कर डारी.

काहू विधि मत कष्ट सह, जब ले दुनियां में हमार बजारी.

झूठ एको रती मैं न कहूं, जस तो हृदय तस मोर विचारी.

कहे मानहुं बात हमारी, भिखारी सुलच्छन साजहु भूसन-सारी.

प्यारी-(दोहा) प्यारी के मन लागल बाटे, जहवां बाड़न राम.

माड़ो में सतबंद भइल बा, कहत भिखारी हजाम.

देवर-(कवित्त) भउजी तूं जइसन अलबेली कटीली बाडू

तइसन हम तन के मस्ताना तइयार हईं.

जइसे तूं चाह करबु तन-मन से हमरा के

तइसे हम धन-जन से सबसे तुम्हारी हईं.

जइसे तूं छल-कपट अयगुन के त्याग देलू

तइसे हम लोभ-मोह, मद से निरधारी

हईं.

मन में बिचार, अब से रोदन बिसार दया करके बिचार कहत दियरा के भिखार हईं.

सुंदरी-(दोहा) देवरजी दया कर, पति-पत्नी में मेल.

कसहूं जाके जल्दी बोला के, नीमन देखा द खेल.

देवर- भउजी सुनहूं बात एक, भइया गये परदेस.

ना जानी केही हेतू से, नाहीं भेजत सनेस.

(चौबोला)भेजत नाहीं सनेस, भेस तब लागत निपट उदासा.

कतहूं से जतन करब हम अबहीं पाका मन बिसवासा.

सुंदरी-बिसवास केहू के करब कइसे, धोखा दे के पियऊ गये.

बिसवास सुख सोहाग पियऊ के संग चले गये.

देवर- भउजी तनिक अफसोस दिल में झूठे करती तूं अबे.

जिंदगी तलक सुख देब तुमको जानिहों हमके तबे.

सुंदरी- जिंदगी के आसा है नहीं, हमको तो आसा पियऊ की.

खाना आ गहना पहनना चाहना नहीं है जिऊ की.

देवर- देह प्रान त प्रिय नाहीं जग कछु, सुनले भउजी कान से.

हठ करके दुख का बोझ से, आखिर तूं मरबू सान से.

(हाथ ध लेत बाड़न) हल्ला मत कर.

सुंदरी- मरना तो बेहतर वही जो मर जाये अपना सान से.

दसरथ जी के पुत्र से प्रिय सुनि ल देवर कान से.

देवर-(चौपाई)

भउजी मान कहल हमारी. नाहीं त करब तुरत बरियारी.असल बाप के हईं बेटा, ते ना सहबे एक चमेटा.

सुंदरी- ना कुछ पइब, मरब जान, पाछे होइब खूब हलकान.

सोच-समझ के चल देवर, चाहे ले ल तन के जेवर.

देवर-जेवर-फेवर कुछ ना चाहों, गोटे बात समझूं मन माहीं.

अबहीं हमरा बस में आ जा, तब देख कइसन बा माजा.

सुन्दरी- माजा राम भेजवलन पार. सुनि ल देवर बात हमार.

जीऊ के पियऊ में लागल आस. चाहे परि गला में फांस.

हे पिया कहां लगवल देरी.

भइ जस हालत बाझ बटेरी.

हे विधि बिष्णु भल बांव.

अब हम कवनी ओर परांव?

हे गंगाजी राख लाज.

हमें बा अपना पियऊ से काज.

शंकर से बिनऊं करजोर.

पिऊ चरन में लागो डोर.

देबी-दुरगा तोहे मनाऊं.

जलदी दरस पिया के पाऊं.

(एगो मेहरारु आव तारी)

मेहरारु- ए बहिन, केवाड़ी खोल, तनि आग द.

समाजी-(चौपाई)

आई पहुंचल मोसकिल भारी

अब का प्यारी करे बेचारी.

तेहि अवसर परोसिन एक आई.

आग-आग कहि के गोहराई.

सुनते देवर निकल पराई.

सत के पत रखलन रघुराई.

अब आगे लिला जे होई.

सो सब कहब सुनब सब कोई.

जेहि बिधि से बिदेसी घर आई.



पिऊ प्यारी भेंटे हरखाई.  
 धन मालिक के बड़का माया.  
 कहे भिखारी करिहें दाय।  
 सुंदरी-(पूर्वी)  
 दिन बहु बिति गइले, तबहूं ना पिया  
 अइले.  
 मनवां में गुतल से कइल बलमुआं.  
 रचि के चिता बनाऊं, लेके स्वामी के  
 खराऊं.  
 जरि कर हरि से मिलब हो बलमुआं.  
 सुंदरी(विलाप गीत-1)  
 रहि-रहि मनवां में उठत बाटे सूल.  
 मुहवां कमलवा के फूल. रहि-रहि...  
 (विलाप गीत-2)  
 हाय सइयां, कइ दिहल, सून भवनवां.  
 बांह धई के सइयां गोसइयां तेयाग  
 दिहल...  
 (विलाप गीत-3)  
 हाय, सइयां कइ देल सून खटोला...  
 (विलाप गीत-4)  
 ए किया हो राम, स्वामी जी के  
 पोसकवा बा घर धइल हो राम...  
 (विलाप गीत-5)  
 राम रसायन तोहरे पास, देरी होत बा  
 महाबीर जी...  
 (विलाप गीत-6, लय लोरिकायन)  
 स्वामी जी के सुरतिया बतिया सालत  
 बा दिन हो रात.  
 उपर से कहत बानी,भितरा से नइखे  
 कहात...  
 (विलाप गीत-6, लय सोरठी)  
 ए किया हो राम, कहिया हम स्वामी  
 जी के दरसन पाइब हो राम...  
 (विलाप गीत-7)  
 उड़ि के तूं चलि जा जिया पियऊ  
 का देसवा में, अहो मोरे राम, मोर  
 मनवां रंगल पिउ के रंग में रांगल हो  
 राम...  
 (विलाप गीत-8)

सइयां गइयां छोड़ल, धइल कवन हो  
 डगरिया...  
 (विलाप गीत-9)  
 चलने का बेरिया कहल ना पियऊ  
 एको बतिया हो.  
 हमरा के छोड़ि के गइल पुरुबवा हो,  
 केई मारल तोहार मतिया हो...  
 समाजी- (धुन पूर्वी)  
 रात कुछ बित गइले, दुअरा बिदेसी  
 अइले  
 कहलन खोलि द केवारी प्यारी ध  
 नियां.  
 चोरवा समुझि कर , लोरवा गिरन  
 लागे, रोई-रोई सोरवा करेली प्यारी ध  
 नियां.  
 दइब कठोरवा भेजवलन चोरवा के,  
 बिपति परल घनघोर बलमुआं.  
 पिया में बा मोर जिया, कसहुं के बारे  
 दिया?  
 हउआ लागी त बूति जाइ हो  
 बलमुआं.  
 आगा-पाछा केहू नाहीं, रोअ तानी घर  
 माहीं,  
 कवन जुगुतिया चलाई हो बलमुआं.  
 प्यारी सुंदरी(चौबोला)-  
 हाय दइब अब केही गोहरराऊं, अइले  
 महलिया में चोर.  
 सइयां घरे रहितन, धइ बान्हिं मरितन,  
 केकरा से कहीं करि सोर.  
 प्रीतम पिउ बिनु प्रान छूटत नइखे,  
 हिरदय बा बहुत कठोर.  
 त्राहि रमापति,त्राहि उमापति, अब ध  
 रम बचावहूं मोर.  
 बिदेसी-(पूर्वी)  
 खोलु-खोलु धनियां से बजर केवरिया  
 हो  
 हम हई पियवा तोहार रे संवरिया.  
 नाहीं हम हई राम ठग बटमरवा से  
 नाहीं हम हई डाकू-चोर रे सांवरिया.

पुरुब से आवत बानी, कर पहिचान  
 बानी  
 मुदित ना बहरे बितल प्यारी धनियां.  
 समाजी- अतना सुनत धानी, खोलली  
 केवरिया से  
 दुअरा पर देखे पिया ठार रे संवरिया.  
 तुरते खोलि के पट, प्यारी ताके पति  
 झट.  
 पपिहा के स्वाति बूंद मिललन  
 बलमुआं.  
 सुंदरी- धन ह आजू के रात, पिया से  
 भइल बात.  
 हिया मोर देखि के जुड़इलन  
 बलमुआं.  
 आजुए के रोज सन, तिथि वो महिना  
 धन, कहत भिखारी कर जोरि के  
 बलमुआं.  
 कुतुबपुर मोर ग्राम, बेड़ा पार ला द  
 राम, जाति के हजाम जिला छपरा  
 बलमुआं.  
 (चौबोला)  
 प्रेम मगन बहुत होत है देखि के चरन  
 तुम्हारे!  
 सोक धार में बहत जात रहीं खींचि  
 के कइलीं किनारे.  
 बहुत दिनन पर दरसन दिहल हे प्रभू  
 प्रान अधारे.  
 हे भिखारी जय गंगाजी बहुरल सेनूर  
 हमारे.  
 बिदेसी- हमार दसा के हाल का  
 पुछले बारु. तोहार बात ना मननी,  
 चल गइलीं कलकाता. कवनों बात क  
 हरजा ना भइल, ओहिजा गइलिं काम  
 लाग गइल, दस रुपया हाथ पर हो  
 गइल. मन कइलस चलिं घरे, तोहरा  
 खातिर निमन-निमन गहना, निमन  
 साड़ी किन के चलनी. रास्ता में  
 चोर-डाकू मार के छिन लेलस.हमार



इहे दसा बा.  
सुंदरी- गहना-गुड़िया, कपड़ा लता के  
काम नइखे, हम देख लेनीं, छुधा भर  
लेनीं.

बिदेसी- एक मुठा भात बनाव, गाड़ी  
के मारल बानी.

(रंडी बिदेसी के गांव पहुंचल बाड़ी  
लइकन के लेले. ओहिजा पूछ तारी)

रंडी- एह गांव में कोई बहरा से  
आइल बा?

समाजी- हं, बिदेसी अइलें हा.

रंडी- उनका घरे कवन राह जाई?

समाजी- हइहे गली धइले चल जा.

बिदेसी-(देखि के चिहात) तोहार का  
दसा भइल?

रंडी- रउआ छोड़ के चल अइलीं.

लइकन साथे सामान ले के आवत

रहीं कि डाकू सब लूट लेलन स.

बिदेसी- अच्छा जाये द. हमार तोहार  
जिनगी रहि त घर भर जाई.

रंडी- एहिजा केहू के चिन्हत नइखिं.

बिदेसी- कइसे चिन्हबू? देख दूमहां  
में सवतिन खड़ा हव.

(रंडी सवतिन के गोर लाग तारी)

रंडी- लइका से- ए बबुआ माई

बाड़ी गोड़ लाग.

(लइका माई के गोड़ लागत बाड़न.

सकल परिवार के मिलन हो जाता)

समाजी- बोलिए वृन्दावन बिहारी

लाल की जय.

( समाप्त )

